हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श तथा वर्तमान परिदृश्य

डॉ. शिल्पी शुक्ला [1]

[1] जे. योगानंदम छत्तीसगढ़ महाविद्यालय रायपुर (छ. ग).

ABSTRACT:

स्त्री विमर्श उस साहित्यिक आंदोलन को कहा जाता है जिसमे स्त्री अस्मिता को केन्द्र में रखकर संगठित रूप से स्त्री साहित्य की रचना की गई। हिंदी साहित्य मे स्त्री विमर्श अन्य अस्मितामूलक विमर्शो के भांति ही मुख्य विमर्श रहा है जो कि लिंग विमर्श पर आधारित है। स्त्री विमर्श को अंग्रेजी में फेमिनिज्म कहा गया है। स्त्री सशक्तिकरण के इस में भारतीय नारी विषयक दृष्टि की प्रासंगिकता अब पूरे विश्व में सिद्ध हो रही है। नारी अब अबला , पराश्रिता सुकोमला नही रही। बडे - बडे संघर्षो चुनौतियों और संकटों मे उसकी रचनात्मता तथा शक्ति - रूप छवि अब विशेष रूप से उजागर होने लगी है।

वह दया क्षमा स्नेह वात्सल्य तथा महत्व की प्रतिमूर्ति तो है ही परिवार समाज तथा राष्ट्र के निर्माण और विकास मे भी हर प्रकार से सक्रिय एवं समाहित दिखने लगी है। वह दया क्षमा स्नेह , वात्सल्य तथा महत्व की प्रतिमूर्ति तो ' है ही , परिवार समाज तथा राष्ट्र के निर्माण और विकास में भी हर प्रकार से सक्रिय एव समाहित दिखने लगी है। वहा वृद्धा और सम्मान की अधिकारिणी तो सदा से रही है , परन्तु वह कर्मशील , कौशलमुक्त तथा अधिकार सम्पन्न छवि के साथ अपनी नई भूमिका में रही है। प्राचीन युग मे नारी के अविद्या माया रूप अग्रसर हो की स्वीकृति नही हुई थी किन्तु विधा माया रूप सदै स्तुत्य एव वेदनीय रही है। आज विधि के क्षेत्र मे इंजीनियरिंग के क्षेत्र में चिकित्सा के क्षेत्र में एवं युद्ध के क्षेत्र मे बक्षत - विज्ञान या अन्य रक्षा वैज्ञानिक तकनीकी क्षेत्रों में किसी से पीछे नहीं। भारत ने प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में स्त्री शक्ति और सामर्थ्य को भली प्रकार उजागर किया है।

KEYWORDS:

अस्मिता स्त्री विमर्श : सशक्तिकरण, साहित्य, पितृसत्तात्मक।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
23rd January 2025	24th January 2025
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.14730731	https://zenodo.org/uploads/14730731

परिचय

स्त्री विमर्श रूढ़ हो चुकी मान्यताओं व परम्पराओं के प्रति अंसतोष व उससे मुक्ति का स्वर है। पितृसत्तात्मक समाज के दोहरे नैतिक मापदंडो, मूल्यो व अंतर्विरोधों को समझने व पहचानने की गहरी अंतरदृष्टि है। विश्व चिंतन मे यह एक नई बहस को जन्म देते है, पितृक प्रतिमानों व सोचने की दृष्टि पर सवालिया निशान लगाता है आखिर क्यों स्त्रिया अपने मुद्दों, अवस्थाओं, समस्याओं के बारे में नही सोच सकती क्यों उनकी चेतना इतने लम्बे अरसे से अनुकूलित, अनुशासित व नियंत्रित की जाती रही। इन सब प्रश्नों पर स्त्री ने जब बोलना व सोचना ' शुरू किया व पितृसत्ता के सामने सवाल खडे किए तो यह उसे ना गवार गुजरा / स्त्री का खुद के बारे में सोचना कभी भी पितृसत्ता को नहीं भाया!

सीमोन द बोउआर के अनुसार ' स्त्री पुरुष प्रधान समाज की कृति हैं वह अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए स्त्री को जन्म से ही अनेक नियमों के ढांचे में ढालता चला गया। " जहां उसका व्यक्तित्व दबता चला जाता है पुरुष समाज स्त्री के चरित्र को स्वर्गिक देवी गुणों और शक्तियों के ढांचों से ऐसा मंडित करता है कि देवीत्व के बोझ तले उसका मनुष्यत्व कब घुट - घुट कर दम तोड़ देता है वह स्वयं भी न ही जान पाती है!

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता " जैसी युक्तियाँ इसी का उदाहरण है!

महादेवी वर्मा जी कहती है " स्त्री न घर का अलंकार मात्र बनकर जीवित रहना चाहती है न देवता की मूर्ति बनकर प्राण प्रतिष्ठा चाहती है ' कारण वह जान गई है कि एक का अर्थ अन्य शोभा बढ़ाना है तथा उपयोग न रहने पर फेंक दिया जाता है तथा दूसरे की अभिप्राय को देखते रहना है जिसे उसे देकर उसी के नाम पर लोग बांट लेगे। इसी कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष को चुनौती देकर स्वय अपनी शक्ति का परीक्षण चाहती है। स्त्री अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व और अपनी पहचान चाहती है वह अपना पूरा जीवन बेटी, पत्नी, मां अन्य होकर नहीं जीना चाहती। इसके लिये उसका सारा प्रयास पितृसत्तात्मक मानसिकता के अस्वीकार व स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्वीकृति का है। " हिंदी साहित्य और स्त्री विमर्श हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की शुरुआत छायावाद काल से मानी जाती है। महादेवी वर्मा की कविताओंमें वेदना के विभिन्न रूप देखने को मिलते है। महादेवी वर्मा जी की श्रृंखला की कड़ियां स्त्री सशक्तिकरण का सुन्दर उदाहरण है जिसमें नारी जागरण मुक्ति के सवाल को उठाया गया है। ऐसा साहित्य जिसमें स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं का चित्रण ' हो स्त्री - विमर्श कहलाता है!

प्रेमचंद से लेकर राजेन्द्र यादव तक अनेक पुरुष लेखकों ने नारी समस्या को उकेरा है। लेकिन उस रूप में नहीं जिस रूप में स्वयं महिला लेखिकाओं ने लेखनी चलायी है। हिंदी कथा साहित्य में नारी मुक्ति को लेकर स्त्री विमर्श की गूंजे 1960 ई.में पश्चिम मे हुई थी। हिंदी साहित्य में जिन महिला लेखिकाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया उनमें उषा प्रियम्बदा, कृष्णा सोबती मन्नू भण्डारी एवं शिवानी, उर्मिला शुक्ल का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इन्होंने नारी मन की छिपी शक्तियों को पहचाना और नारी की दिशा हीनता, दुविधारतस्तता, कुण्ठा आदि का विश्लेषण किया समाज के दो पहलू स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक है किसी एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व नही है। उसके बाद भी पुरुष समाज ने महिला समाज को अपने बराबर की समानता से वंचित रखा। इस पक्षपात दृष्टि ने शिक्षित नारियो का आंदोलन करने को मजबूर किया जो आज ज्वलंत मुद्दा नारी विमर्श के रूप मे दृष्टिगोचर है। आदिकाल ' से ही नारियों की दशा दयनीय एवं सोचनीय थी। स्त्रियों की दशा को देखकर विवेकानंद जी कहते है -" स्त्रियों की अवस्था को सुधारे बिना जगत के कल्याण की कोई सम्भावना नही है। विवेकानंद जी महिला समाज की वास्तविक से चिंतित देश एवं समाज की भलाई महिला

समाज की तरक्की के बगैर असंभव बताया है " भारतीय समाज में नारी सदा केंद्र का विषय रही है। नारी के बिना न तो समाज की सोभा बढ़ती है और ना ही घर परिवार की। नारी को कभी सृष्टि के केन्द्र मे रखकर उसे आदि शक्ति स्वरुपा तो कमी मां के रूप मे सबसे पहले पूजनीय माना गया है इन सबके बावजूद नारी को कभी सृष्टि के केन्द्र में रखकर उसे आदिशक्ति स्वरूपा तो कभी माँ के रूप में सबसे पहले पूजनीय माना गया है

इन सबके बावजूद नारी को कभी राजनैतिक तो कमी कभी धार्मिक और कभी सामाजिक परिवर्तन के दबाव के चलते एक बड़े समय तक शोषित किया जाता रहा है यह बात बिल्कुल अलग है कि भारतीय नवजागरण काल में नारी के सामाजिक उत्थान के लिए अनेक प्रयास किये गये है। राजा राममोहन राय से लेकर ज्योतिबा फूले तक अनेक उदाहरण मिलते हैं। प्राचीन भारतीय समाज से लेकर वर्तमान आधुनिक काल तक नारी जीवन रहा है। आज की नारी हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति की राह पर अग्रसर हो रही है हालांकि इन सबके बावजूद उसें तमाम विपरीप परिस्थितियों और संघर्ष का भी सामना करना पड़ता है

नारी जीवन के संघर्ष, उसकी अंतर्वेदना, उसकी पीड़ा सहित अनेक पहलुओं को महिला कथाकारो ने भी अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है।

वर्तमान समय मे नारी विमर्श का जो रूप उभरकर आ रहा है उसमें नारी स्वतंत्रता के साथ-साथ यौन स्वतंत्रता की मांग भी उठ रही है। इस विचार पर अवश्य ही पश्चिमी

दृष्टिकोण का प्रभाव कोमल अनुभूति , तीखे आक्रोश में बदल रही है। ऐसे रचनाकारों में कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्‌गल, प्रभा खेतान मैत्रेयी पुष्पा तथा ' नासिरा शर्मा जया जादवानी एवं उर्मिला शुक्ल आदि की रचनाएं है। नारी विमर्श नारी की कोमल तथा संवेदनात्मक भावना को लेकर भी पर्याप्त मात्रा में सृजन करता है जो आज भी पाठकों को चिंतन के लिए बाध्य करता है। इनमे मन्नू भण्डारी इन्दुबाली, नासिरा शर्मा, चित्रा मुद्गल, नमिता, सिंह मृणालपांडे तथा अलका सरावगी आदि रचनाकार प्रस्तुत होती है। इन्होंने विरोध तथा विद्रोह के तेवर को भी अल्पमात्रा में परिवर्तनवादी दृष्टिकोण के रूप में अपनाया है। वर्तमान समय का नारी विमर्श उन पक्षों को भी खोल रहा है जिसके संदर्भ में नारी अब मौन पाले हुई थी।

भारत में स्त्री अध्ययन की शुरु हुये लगभग तीन दशक बीत चुके है।भारतीय स्त्रियों की स्थिति का आकलन करने के लिए भारत सरकार ने जो समिति (cswz) गठित की थी, उसके द्वारा तैयार की गयी रिपोर्ट ' समता की ओर ' के 1975 में प्रकाशन के बाद भारतीय स्त्रियों के जीवन से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विविध प्रकार के लेख लिखे गये है! इस

रिपोर्ट, जिसे प्राय: स्त्री - अध्ययन का आधारभुत ग्रंथ माना जाता है तथा अन्यान्य गतिविधियों के साथ साथ मुख्यधारा के तमाम अकादमिक अनुशासनो की गम्भीर आलोचना कर्म का सिलसिला शुरू कर दिया। इतना ही नहीं, इसने पिछले तीन दशक के दौरान समाज विज्ञानो को खास तरह की ऊर्जा और जीवन्तता प्रदान की इन्होंने उत्कृष्ट तरीके से व्यापक मुद्दों की खास समस्याओं तथा समग्र दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया! मध्य वर्ग के अकादमिक और विद्वान स्त्रियो ने अपने अपने जीवन से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर उम्दा लेखन कार्य किये है! इस रिपोर्ट ने खुद को उस परम्परा की ही निरन्तरता में रखा है जिसकी शुरुआत 19 वीं सदी में हुई थी और जिसके लिए स्त्री प्रश्न बृहत्तर समाजिक, और राजनीतिक सरोकारों का अभिन्न अंग था। दूसरे शब्दो में इसके मुताबिक स्त्री प्रश्न अपने - आप में से कोई प्रश्न न होकर व्यापक सामाजिक और राजनीतिक प्रश्नो का हिस्सा है। संघर्षो को चलाने वालों का कहना है कि स्त्रियों को पुरातन काल से ही प्रतिकूल दशा मे रखा गया है, इसलिये उन्हें पुरुषों की तरह ही अवसर की समानता प्रदान की जानी चाहिये!इसके लिये अनेक राजनैतिक आन्दोलन चले है, जिनका सम्बन्ध सामान्य राजनैतिक अधिकारों से लेकर उसे विशेष दर्जा दिए जाने और कार्य -

पर सुरक्षा के अलावा विवाह में उसकी भूमिका और आवाज तक की बात शामिल रही है। विमर्श के केन्द्र में कुछ बुनियादी सवाल होते है। उसके इर्द गिर्द उसे बल देने वाले भी कई अन्य सवाल होते है। स्त्री विमर्श को लेकर आज बहुत सवाल उठाये जा रहे है जिनकी केंद्रीय समस्या है पित्रसत्तात्मक समाज की विसंगतियो समाज या पुरुष वर्चस्व के संस्कारो कि विडम्बनाएं है।

उनसे कैसे जूझा जाए की ईमानदार स्वीकृति से की जा सकती है इस वास्तविकता के, कि स्त्री ने अपने वजूद से आधी दुनिया के वजूद को संभव बनाया लेकिन हमारे सभ्य समाजों का इतिहास यह बताता है कि स्त्री को अपनी आवाज में बोलने का हक पूरी तरह से नहीं दिया गया उसके बारे में पक्ष या विपक्ष में जो भी बोले वे दूसरे ही थे

महादेवी वर्मा ने उस समय स्त्री के विषय में आवाज उठायी थी जब सीमोन द बुआ की किताब नही आयी थी

किसी पश्चिम की किताब को पढ़ कर महादेवी स्त्री के पक्ष में नही स्त्री खड़ी हुयी थी उन्होंने स्त्री होने के नाते जब पहचाना था -

" विस्तृत नभ का कोई कोना मेरा न कभी अपना होना। " तब जो पीड़ा झेली थी वह व्यक्त की थी

आज की स्त्री अपने अस्तित्व कि पहचान कर रही है अपनी स्वतन्त्रता के प्रति अधिक सजग हुई है घर की चहारदीवारी मे न कैद होकर स्वतन्त्र होना चाह रही है। यह सत्य कि देश में आज कन्या भ्रूण का पाप शोषण की घटनाए बढ़ रही है और हमें चिंता में डाल रही है!पर इसका सामना करने के लिए प्रयास भी स्त्रियों की ओर से शुरू हो चुके है!महिला लेखिकाओं ने अपने लेखन में स्त्री विषयक चिंतन को तेजी से उभारा है! मैत्रीय पुष्पा तथा उर्मिला शुक्ल ने हिंदी साहित्य जगत में कथा उपन्यास आदि के माध्यम से महिलाओ की पीड़ा उनके शोषण और उनकी दबी हुयी इच्छाओ को बड़े ही सशक्त ढंग से व्यक्त किया है महिला सशक्तिकरण के लिए अपनी रचनाओं में एक - एक शब्द एक - एक वाक्य से मजबूत दिशा देने की कोशिश की है! अभिव्यक्ति इतनी प्रभावशाली है कि भारत का शहरी और ग्रामीण परिवेश छोटी - छोटी जीवंत अनुभूतियां उनके लेखन में सामने आती है!

आज का युग महिला सशक्तिकरण का है आज स्त्री की जिंदगी को सुधारने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है शिक्षा और आर्थिक स्वावलम्बन के जरिये स्त्रियों में स्वाभिमान और आत्मविश्वास पैदा होते है! उसके नजरिये में बदलाव आता है स्त्री निर्णय लेना सीखती है!इससे उसका संघर्ष मजबूत होता है वह विवाह और परिवार में छिपे अंतर्विरोधो से वाकिफ हो जाती है! कभी महिला अबला कही जाती थी आज सबला है! अंधविश्वासो, धार्मिक, पाखंडो का खुलकर विरोध करती है, अकेली स्त्री एवं दूसरी स्त्री के जरिये व समाज द्वारा थोपी गई भूमिकाओ को नकारती है विवाह संस्था को चुनौती देती हुई अपने जीवन में नैतिकता के नए प्रतिमान रचती है! वह मात्र पुरुष की छाया नहीं है उसका अपना वजूद है महत्वकांक्षा रास्ते है, मंजिले है उपलब्धिया है, मजबूरिया है और आज नए युग की स्त्री अपनी खूबियों खामियों और रहस्यात्मकता के साथ कथा साहित्य में सांस ले रही है! साहित्य गति में धीरे धीरे पाठको की चेतना में परिवर्तन लाता है उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है!

आज स्त्री शिक्षित एवं स्वावलम्बी बन रही है समाज में अपनी अस्मिता की पहचान बना रही है वह हर क्षेत्र में अपना एक स्थान क़ायम कर रही है पर आज भी बहुत सी स्त्रिया घर की दहलीज में कैद है! वह करना तो बहुत कुछ चाहती है मगर कर नहीं पाती वह विवश है!वैयकतिक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि स्तरों पर होने वाले शोषण अत्याचार के विरोध में संघर्ष को मुखर करना ही स्त्री विमर्श का मुख्य लक्ष्य है

REFERENCES

1. स्त्री विमर्श विविध पहलू - संपादक कल्पना वर्मा

2. स्त्री विमर्श की जमीन - संपादक श्री प्रकाश मिश्र

3. स्त्री अध्ययन एक परिचय - संपादक उमा चक्रवर्ती, साधना आर्य

4. उर्मिला शुक्ल की रचनाओं में स्त्री विमर्श - संपादक शिल्पी